

पंचवटी की समकालीन प्रासंगिकता

एम.के. विजयराघवन

सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, एस.आर.एम. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय काट्टांकुलतूर – 603 203

Email: vijayaraghavanhindi@srmasc.ac.in

Received: 05 June 2026 | Accepted: 18 June 2026 | Published: 30 June 2026

Abstract (सार)

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि और आलोचक मैथ्यु आर्नल्ड ने साहित्य के प्रति उपयोगितावादी दृष्टिकोण अपनाकर साहित्य को समाज का दर्पण अर्थात् *Literature is the mirror of society* कहा था। साहित्य मनोरंजन का साधन न होकर मानव समाज के विभिन्न प्रश्नों, समस्याओं को इस कार प्रस्तुत किया करता है जिस से जीवन-समाज का मार्गदर्शन तो हुआ ही करता है, उस का भीतरी और बाहरी स्वरूप भी उभर कर सबके सामने आ जाया करता है। इस दृष्टि से परखा जाए तो हिन्दी भक्ति साहित्य की देन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें रामायण या रामकथा पर आधारित साहित्य का उल्लेखनीय स्थान है। क्योंकि रामायण सर्वकालिक है अर्थात् भूत, वर्तमान एवं भविष्य के लिए यह अपनी प्रासंगिकता का छाप छोड़ रहा है। प्रमुखतः मैथिलीशरण गुप्त जी के पंचवटी खण्डकाव्य इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। रामायण मानव समाज के लिए एक प्रेरणा श्रोत है। अतः हिन्दी भक्ति साहित्य के दोहा एवं पदों को पाठ्यक्रम के रूप में रखना अधिक प्रासंगिक ही है। इसके अभाव में विद्यार्थी जीवन-शिक्षा से अपरिचित रहेंगे और कुसंगत में पड़कर पथभ्रष्ट हो जाने की संभावनाएँ अधिक हैं।

मुख्य शब्द : प्रासंगिकता, खण्डकाव्य, देश की रक्षा, कर्तव्यनिष्ठा, एकपत्नीत्व, पुरुष, समाज, अंगहीन और अनैतिक व्यवहार।

भूमिका

मैथिलीशरण गुप्त जी अपने पंचवटी खण्डकाव्य में विद्यार्थियों के लिए अनेक जगह पर श्रीराम, लक्ष्मण और शूर्पणखा के संवादों के माध्यम से परोक्ष रूप में सफल जीवनदिशा का मार्ग प्रस्तुत किया है। समकालीन प्रासंगिकता के प्रमाण स्वरूप में मैं गुप्त जी के द्वारा रचित पंचवटी खण्डकाव्य में उल्लिखित जीवनुपयोगी चार विषयबिन्दुओं को आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ। वे हैं देश की रक्षा की भावना, स्त्री-पुरुष की मर्यादाओं की सीमा, बहुविवाह का खण्डन और अनैतिक व्यवहार का विरोध करने की भावना का प्रोत्साहन आदि।

देश की रक्षा की भावना

देश की रक्षा का भार उस देश के युवकों के कंधों पर निर्भर रहता है। देश सुरक्षित है तो देशवासी भी सुखी एवं सुरक्षित रहेंगे। अतः संपूर्ण देशवासियों की सुख-चैन के लिए देश की सीमाओं पर युवा सैनिक चौबीसों घंटों पहरे पर तैनात है। वे भूख-प्यास, सुख-आराम और काम-मोह की चिंता का त्याग कर हमेशा दुश्मनों के छल-कपट, अस्त्र-शस्त्र प्रयोगों को विफल करने की सोच करते रहते हैं। इस महान सेवा के लिए वे किसी तरह की प्रतिफल की इच्छा नहीं रखते हैं। उनके दिमाग में कर्तव्यनिष्ठा का भूत मात्र सवार होता है।

पंचवटी खण्डकाव्य में गुप्त जी लक्ष्मण को कर्म एवं निष्ठावान के रूप में चित्रित किया है। लक्ष्मण एक युवा एवं नई शादीसुधा है। भाई श्रीराम वनवास पर निकले तो वह उनकी सेवार्थ अपना सब कुछ त्यागकर एक योगी का रूप धारण कर लेता है। वन में भाई और भाभी को राक्षस एवं अन्य प्रकार के दुष्ट जन्तुओं के आक्रमणों से बचाने के लिए खुद रात भर पर्णकुटी के बाहर पहरा करता है। कर्तव्यनिष्ठा प्रत्येक युवा के लिए जरूरी मानकर गुप्त जी पंचवटी खण्डकाव्य में लक्ष्मण के द्वारा यह संदेश युवा तक पहुँचाने की कोशिश करते हुए कहते हैं-

पंचवटी की छाया में है
सुन्दर पर्ण - कुटीर बना,
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर
धीर वीर निर्भीकमना,
जाग रहा यह कौन धनुर्धर
जब कि भुवन भर सोता है ?
भोगी कुसुमायुध योगी - सा
बना दृष्टिगत होता है ।¹¹

अर्थात् पंचवटी में श्रीराम और सीता अपने लिए एक पर्णकुटी बना लिए। उस कुटिया के सामने पत्थर की एक बड़ी-सी शिला पड़ी है। लक्ष्मण उस शिलाखण्ड पर बैठकर रात्री भर जागता रहता है। जबकि सारी दुनिया सुख-चैन की नींद में सो रही है। लक्ष्मण संसार के समस्त भोगों को भोगने के योग्य होते हुए भी कर्तव्य पालनार्थ योगी के समान अपनी व्यक्तिगत सुख-इच्छा आदि का त्याग दिया है। लगता है कामदेव स्वयं ही अपना पुष्प-धनुष सहित यहाँ पहरा देने आ गये हैं।

स्त्री-पुरुष की मर्यादाओं की सीमा

घर परिवारों में स्त्रीजात को कुछ सीमा के अंतर्गत ही अपनी काम-काज करने पड़ते हैं। घर के पुरुषों तक से वे खुलकर बात नहीं कर सकती ऐसी एक शिष्टता है समाज में। ऐसी स्थिति में वे पराये पुरुष से बातचीत की कल्पना तक नहीं कर सकती। यह पुरुष के लिए भी लागू है। अपरिचित स्त्री के साथ बात करना असभ्य माना जाता है। रावण की बहन शूर्पणखा लक्ष्मण की सौन्दर्यता पर मुग्ध होकर उसके सम्मुख उपस्थित होती है। लक्ष्मण सभ्यता एवं पुरुष मर्यादावश उससे बात नहीं करते हैं तो शूर्पणखा पुरुषों को हृदयहीन कह देती है। लक्ष्मण शूर्पणखा के इस आरोप को अपने सहज स्वभाव और सहज मानवीय मर्यादा-भाव से तिरस्कार करते हुए कहते हैं कि

पर मैं ही यदि पर नारी से
पहले सम्भाषण करता,
तो छिन जाती आज कदाचित्
पुरुषों की सुधर्मपरता ।¹²

अर्थात् मैंने तुमसे पहले बातचीत न करके उचित ही किया है। इसी में मेरी और तुम्हारी दोनों की मर्यादा है। मैं पराया पुरुष और तुम परायी स्त्री हो। ऐसी स्थिति में भला मैं परायी स्त्री से पहले कैसे बात कर सकता। यदि मैं ही तुम से पहले बात करता तो शायद पुरुष समाज की धार्मिकता एवं मर्यादा छिन जाती या समाप्त हो जाती।

देश का सम्मान उस देश की स्त्रीजाति के गुणों से हाँका जाता है। भारतीय समाज में स्त्री के लिए ऐसे बहुत कुछ नियम हैं जिससे वह सम्मान की अधिकारी भी हैं। स्त्री, काम और मोह के विषय में पति के साथ बहस करना असभ्य माना जाता है। लज्जावश वह अपनी छोटी-मोटी इच्छाएँ तक खुलकर प्रकट नहीं करती। इसके कारण समाज में एक विशिष्ट स्थान हासिल कर रखी हैं। पंचवटी में जब शूर्पणखा ने इन मर्यादाओं को भूलकर लक्ष्मण से प्रणय का प्रस्ताव रखा तो लक्ष्मण स्त्री मर्यादा का ध्यान दिलाते हुए कहता है कि

हा नारी! किस भ्रम में है तू
प्रेम नहीं यह तो है मोह;
आत्मा का विश्वास नहीं यह
है तेरे मन का विद्रोह !
विष से भरी वासना है यह,
सुधा-पूर्ण वह प्रीति नहीं ;
रीति नहीं, अनरीति और यह
अति अनीति है, नीति नहीं ।¹³

अर्थात् हे नारी! तुम प्रेम के नाम पर सिर्फ अपना वासना मात्र प्रकट कर रही हो जो विनाश का कारण भी बन सकता है। तुम जीवन, समाज और नारी जाति की रीति का पालन नहीं कर रही हो। यह तुम्हें कुपथ में ही डालेगा। तुम्हारा व्यवहार किसी भी दृष्टि से नीति पूर्ण नहीं कहा

जा सकता बल्कि मानवीय दृष्टि से पूर्णतया अनीतिपूर्ण है। गुप्त जी यह कहना चाहते हैं कि स्त्री कभी भी किसी भी हालत में अपने और समाज की सभी मर्यादाओं को उल्लंघन न करें।

बहुविवाह का खण्डन

स्त्रीजात का सम्मान तो उसकी पातिव्रत धर्म पर निर्भर रहता है। स्त्री संयम की मूर्ति है। पति के समस्त अपराधों को सहर्ष स्वीकार कर अंत तक उसके साथ जीवन निर्वाह करती है। पुरुष समान वह अनेक पति नहीं रखती। पुरुष स्त्री के इस महान सतीपन से खुश होकर उसकी प्रशंसा करता है। स्त्री के समान पुरुष को भी आदर्श जीवन बिताना चाहिए और अनेक विवाह अर्थात् बहुपत्नीत्व का विरोध कर अपने जीवन में एकपत्नीत्व का संकल्प करना चाहिए। समाज में स्त्री-पुरुष का नियम और अधिकार बराबर और एक समान होना चाहिए। तभी आदर्श समाज की नींव कायम होगी। गुप्त जी अपने इन विचारों को लक्ष्मण के माध्यम से व्यक्त किया है। शूर्पणखा लक्ष्मण विवाहित होने पर भी उसे दूसरी शादी के लिए विवश करती है। तब लक्ष्मण शूर्पणखा के इस मनोरथ को मोड़ने का प्रयास करते हुए कहता है कि

नारी के जिस भव्य-भाव का
साभिमान भाषी हूँ मैं,
उसे नरों में भी पाने का
उत्सुक अभिलाषी हूँ मैं ।
बहुविवाह-विभ्राट, क्या कहूँ,
भद्रे, मुझको क्षमा करो;
तुम कुशला हो, किसी कृती का
करो कहीं कृतकृत्य वरो ।⁴

अर्थात् मैं नारी जीवन के जिन सुन्दर और महान भावों से भरे गुणों का प्रशंसक तथा व्याख्याता हूँ, जिन गुणों पर अभिमान करता हूँ, वैसे ही अलौकिक गुण और आदर्श पुरुष समाज में भी देखने का इच्छुक हूँ। मेरी दृष्टि में दो या अनेक विवाह करना एक बहुत बड़ा बखेडा और अनुचित, आदर्शहीन कार्य है। अतः मुझे तो तुम क्षमा ही कर दो और योग्य वर का चयन करो। मुझे आदर्श पुरुष बनने का सुवसर प्रदान करो।

अनैतिक व्यवहार का विरोध

आज समाज पूरी तरह से स्वार्थ में डूबा है अर्थात् समाजवाले अपने व्यक्तिगत लाभ एवं खुशी की खोज में पड़कर बुरे रास्ते में संपत्ति जुटाने में लग गये हैं। अतः वे समाज में होने वाले अनैतिक व्यवहार एवं बुराईयों को अनदेखे या पूछने की हिम्मत हारकर एक शव का जीवन बिता रहे हैं। व्यक्तियों के इस प्रकार के स्वार्थ व्यवहार के कारण देश का विकास नहीं हो रहा है। समाज के प्रत्येक मानव का यह हक है कि अधर्म कहीं भी हो उसे ठठकर विरोध करें और आवश्यकता होने पर उचित दण्ड देने से हिचके नहीं। गुप्त जी पंचवटी में लक्ष्मण के माध्यम से इस विचार की पुष्टि किया है। शूर्पणखा, लक्ष्मण विवाहित होने के बावजूद भी पहले उससे शादी करना चाही बाद में श्रीराम से। जब उसकी यह चाह सफल नहीं हो पायी तो अपना वास्तविक रूप लेकर श्रीराम और लक्ष्मण को धमकाने लगी। तब बाहरी सुन्दरता में छिपी कुरूपता के प्रति विरक्ति प्रकट कर, शूर्पणखा को अंगहीनता की पहचान देने की बात कह कर लक्ष्मण कहता है कि

बाह्य सृष्टि-सुन्दरता क्या
भीतर से ऐसी ही हाय !
जो हो, समझ मुझे भी प्रस्तुत,
करता हूँ मैं वही उपाय ।
कि तू न फिर छल सके किसी को
मारूँ तो क्या नारी जान,
विकलांगी ही तुझे करूँगा,
जिससे छिप न सके पहचान ।⁵

अर्थात् यह सृष्टि जो बाहरी रूप से देखने में बहुत सुन्दर लगती है, भीतर से या अपनी वास्तविकता में वह तुम्हारी ही समान असुन्दर एवं कुरूप है। हाय! यह कितने खेद का विषय है। खैर, तुम जो हो, सो हो। मैं भी अब तुम्हारे छली व्यवहार का उचित उपाय करने को एकदम तैयार हूँ। तू

फिर जीवन में कभी किसी को धोखा न दे सके ऐसा कुछ कर दूँगा। वैसे तो तुझे मार ही डालना चाहिए, पर तू नारी जात, अतः मार डालना उचित नहीं लगता। ऐसी दशा में मैं तुझे अंगहीन ही बना दूँगा, ताकि तेरी पहचान बनी रह सके और भविष्य में कोई तेरे धोखे में न आए।

निष्कर्ष

परस्पर प्रेम, सहयोगी, सहनशील, उदात्त होने पर मानव का जीवन सुखमय एवं शांतिपूर्ण रहेगा। इसका मार्गदर्शन भक्ति साहित्यों में ही ज्यादा उपलब्ध है। क्योंकि भक्ति साहित्य युग-जीवन और समाज का प्रतिबिम्ब है। भक्ति साहित्यों को हम केवल काल-सीमा के अंतर्गत सीमित नहीं रख सकते हैं यह तो सर्वकालीन है। यह साहित्य कभी भी पुराना या प्राचीन नहीं हो सकता। अर्थात् जब भी पाठक इसका स्वाद उठाना चाहेगा उसे वह ताजा एवं अधिक प्रासंगिक महसूस करेगा। अतः समकालीन पाठ्यक्रमों में भक्ति साहित्यों के लिए उचित स्थान होना नितान्त आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची :

पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, 2002, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी द्वारा हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

संपादक : प्रमोदकुमार गुप्त, मानस मुद्रण, 184, तलैया, झाँसी, उत्तर प्रदेश।

- [1]. पद - 2, पृ.सं. 5
- [2]. पद - 38, पृ.सं. 20
- [3]. पद - 62, पृ.सं. 29
- [4]. पद - 56, पृ.सं. 27
- [5]. पद -116, पृ.सं. 41

Cite this Article:

एम.के.विजयराघवन. (2026). पंचवटी की समकालीन प्रासंगिकता. *International Journal of Emerging Research in Arts, Science and Technology*, 1(3), 23–26.

Journal URL: <https://ijerast.com/>

DOI: <https://doi.org/10.67715/ijerast.v1i3.14>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.